प्राकृतवासों की जगह पार्किंग

राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा प्रस्तुत ताज़ा रिपोर्ट में बताया गया है कि युरोपीय देश जैव विविधता संरक्षण के मामले में काफी पिछड़ गए हैं। युरोप यह समझने में भी असफल रहा है कि उसका वन्य जीवन कितना समृद्ध हैं, उसके संरक्षण के लिए प्रयास की बात तो दूर की है। राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम और युरोपीय परिषद द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है कि युरोप के देश जैव विविधता संरक्षण के संदर्भ में पर्याप्त प्रयास नहीं कर रहे हैं।

रिपोर्ट में सबसे बड़ी चिंता तो प्राकृतवासों के विनाश के संदर्भ में जताई गई है। रिपोर्ट के मुताबिक 1990 के दशक में युरोप के खेतों व जंगलों का 7700 वर्ग कि.मी. क्षेत्र कार पार्किंग, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और अन्य इमारतों के निर्माण में खप गया। यह कोई छोटा-मोटा इलाका नहीं है - इतने बड़े भूभाग पर लंदन जैसे पांच महानगर बसाए जा सकते हैं।

वर्ष 2003 में युरोप के 53 देशों ने जैव विविधता संरक्षण के लिए 9 मुद्दों पर काम करने पर सहमति बनाई थी। मगर रिपोर्ट के मुताबिक इनमें से मात्र एक क्षेत्र में ठीक-ठाक काम हुआ है। युरोप के देश वन्य जीवों के लिए आरक्षित पार्क बनाने में अव्वल रहे हैं। जहां दुनिया भर में वन्य जीवों के लिए आरक्षित उद्यानों का क्षेत्रफल कुल भूमि का 12 प्रतिशत है, वहीं युरोप में यह आंकड़ा 17 प्रतिशत से ज़्यादा है। अर्थात नेशनल पार्क, सेंक्चूरी वगैरह तो काफी बने हैं।

मगर बाहरी प्रजातियों के प्रवेश को रोकने या खेती में विविधता को बढ़ावा देने जैसे अन्य मुद्दों पर प्रगति निराशाजनक रही है। इस पर सरकारों को ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि किसानों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए कि वे जैव विविधता का संरक्षण करें, उसे बढ़ावा दें। मगर राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम यह भी स्वीकार करता है कि यह बात विश्व व्यापार संगठन के मुक्त व्यापार सम्बंधी नियमों से टकराव का सबब भी बन सकती है। ***(स्रोत फीचर्स)***